BIHAR FOUNDATION
BONDING • BRANDING • BUSINESS

बिहार सरकार
उद्योग विभाग

+91 0612 2547371
+91 85442 99526
https:// biharfoundation. bihar.govt.in

सम्प्रति बिहार

बिहार फाउन्डेशन की प्रस्तुति

बिहार के महत्वपूर्ण अखबारों में छपे **सकारात्मक** समाचारों का संकलन

आषाढ़ शुक्ल पक्ष पंचमी सोमवार विक्रम संवत् 2079। 04 जुलाई 2022

JKDESIGN 8369994118

6TH FLOOR, INDIRA BHAWAN, RCS PATH, PATNA-800001. BIHAR, INDIA.

भारतमाला परियोजना. बिहार के तीन जिलों से गुजरेगा एक्सप्रेस-वे

वाराणसी-कोलकाता एक्सप्रेस-वे का निर्माण इस साल के अंत तक होगा शुरू

जमीन अधिग्रहण शुरू

➲ 24275 करोड़ रुपये आयेगी लागत

संवाददाता ▷ पटना

वाराणसी से कोलकाता वाया रांची एक्सप्रेस-वे का निर्माण इस साल के अंत तक शुरू हो जायेगा. फिलहाल इसे बनाने के लिए अलाइनमेंट तय हो चुका है और जमीन अधिग्रहण की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है. करीब 686 किमी लंबाई में करीब 24 हजार 275 करोड़ रुपये की लागत से बनने वाला यह एक्सप्रेस-वे बिहार के तीन जिलों कैमूर, रोहतास और औरंगाबाद जिलों से होकर गुजरेगा. इससे इन जिलों से कोलकाता तक आवागमन में करीब 50 फीसदी समय की बचत होगी. साथ ही बिहार को उत्तर प्रदेश, झारखंड और पश्चिम बंगाल से नयी कनेक्टिविटी मिलेगी. इससे लोगों को काफी सुविधा होगी.

50%
समय की बचत होगी

686
किमी लंबी सड़क

पूरी तरह ग्रीनफील्ड होगी यह सड़क

सूत्रों के अनुसार भारतमाला परियोजना के दूसरे चरण में बनने वाले इस एक्सप्रेस-वे की शुरुआत वाराणसी रिंग रोड और एनएच-19 के जंक्शन से शुरू होगी. यह मुगलसराय, भभुआ, सासाराम, औरंगाबाद, शेरघाटी, चतरा, हजारीबाग, रामगढ़, बोकारो, पुरुलिया से हावड़ा के पास उलुबेरिया तक जायेगी. इस अलाइनमेंट में खड़गपुर और रांची जाने के लिए अलग से 85 किमी लंबाई में लिंक सड़क बनेगी. यह पूरी सड़क ग्रीनफील्ड यानी नयी होगी. वर्तमान में देश में 1455.4 किमी एक्सप्रेस-वे हैं. देश में वर्तमान में 50 एक्सप्रेस-वे हैं, जिन पर 120 किमी प्रतिघंटे की रफ्तार से गाड़ियां दौड़ती हैं. अब इस नये एक्सप्रेस-वे पर भी करीब 120 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से गाड़ियां दौड़ सकेंगी.

जमीन अधिग्रहण के लिए स्थानीय प्रशासन ने दावा-आपत्ति मांगा

सूत्रों के अनुसार इस एक्सप्रेस-वे को बनाने के लिए दो अलाइनमेंट का प्रस्ताव था. इसमें से कम दूरी सहित अधिक शहरों को संपर्कता प्रदान करने वाले अलाइनमेंट को ही मंजूरी दी गयी है. फिलहाल बिहार के तीन जिलों से गुजरने वाले गांवों में जमीन अधिग्रहण के लिए स्थानीय प्रशासन ने दावा-आपत्ति मांगा है. जमीन अधिग्रहण की प्रक्रिया बरसात के तुरंत बाद हल होने की संभावना है. जिला प्रशासन के स्तर पर इससे संबंधित तैयारियां की जा रही हैं.

सौजन्य से प्रभात खबर | पटना | 04.07.2022 | पृष्ठ सं० 02

अमेजॉन व फ्लिपकार्ट पर बिकने लगा 'सोन चिरैया ब्रांड'

पटना, वरीय संवाददाता। गरीब महिलाओं का उत्पाद सोन चिरैया ब्रांड अब अमेजॉन और फ्लिपकार्ट जैसी ई-कॉमर्स कंपनियों के पोर्टल पर बिकना शुरू हो गया है। पटना और भागलपुर की स्वयं सहायता समूह द्वारा उत्पादित अचार, पापड़, लहठी, मौरी, दौरी, टोकरी, खिलौने, मसाला, मखाना, चूड़ियां, सत्तू और बेसन इसमें शामिल है। पटना और भागलपुर से पिछले एक महीने में एक लाख रुपये का उत्पाद महिलाओं ने अमेजॉन और फ्लिपकार्ट पर बेचा है।

800

स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को बाजार देने की पहल

कहां से कौन उत्पाद चुना गया

- सीतामढ़ी : चेरी, लहठी, मखाना का लावा, बेसन, सत्तू और मसाला
- बिहारशरीफ : सत्तू, बेसन ■ मधेपुरा : बरी, पापड़, अचार
- गया : लहंगा, कपड़े, तिलकुट, अनरसा, लाई, लुंगी, अदौरी, मसाला
- भागलपुर : तसर सिल्क की साड़ी, दुपट्टा, चादर, पैंट-शर्ट का कपड़ा और हस्तशिल्प, डलिया, बांस से बने सामान
- पटना : मौरी, दौरी, मिट्टी के बने हाथी-घोड़ा, घड़ा, टोकरी, पंखा, अचार, पापड़

यहां पर जमा होता है सामान

सीतामढ़ी, भागलपुर, पूर्णिया, बेतिया, मधेपुरा, गया, पटना

केन्द्रीय आवास एवं शहरी मामलों के मंत्रालय की ओर से लांच सोन चिरैया ब्रांड के तहत राज्य के सात जिलों में बिक्री स्थल बनाया गया है। सभी जिलों के लिए अलग-अलग विशेष उत्पाद को ई-कॉमर्स पोर्टल पर बेचने के लिए चुना गया है। पटना के मौर्या लोक में बिक्री काउंटर खोला गया है। एक स्वयं सहायता समूह में 10 महिलाएं रहती हैं। नगर आवास विकास विभाग के राज्य मिशन प्रबंधक आशीष कुमार पाठक ने बताया कि राज्य में शहरी गरीब महिलाओं को 27 हजार और स्वयं सहायता समूह की 2 लाख 70 शहरी गरीब महिलाओं को जोड़ा गया है। समूह की महिलाओं द्वारा उत्पादित हस्तशिल्प और स्थानीय उत्पाद पर सोन चिरैया ब्रांड का लोगो लगाकर एक जगह इकट्ठा किया जाता है। इसके बाद नगर निकाय के माध्यम से ई-कामर्स पोर्टल पर बेचा जाता है। सभी जगह वेयर हाऊस हैं। अभी पटना और भागलपुर में सोन चिरैया ब्रांड का काउंटर खोला गया है।

सौजन्य से हिन्दुस्तान | पटना | 04.07.2022 | पृष्ठ सं० 8

एनआईआरएफ : बिहार के संस्थानों को रैंकिंग में उछाल की उम्मीद

■ चंदन द्विवेदी

पटना। नेशनल इंस्टीट्यूशनल रैंकिंग फ्रेमवर्क (एनआईआरएफ) रैंकिंग में हिस्सा ले रहे बिहार के संस्थानों को इस बार पहले से बेहतर स्थान मिलने के आसार हैं। आईआईटी, एनआईटी, सीआईएमपी सहित भाग लेने वाले अन्य संस्थानों में हाल के दिनों की उपलब्धियों से यह उम्मीद जगी है। पिछले दो सालों में इन संस्थानों ने रैंकिंग की सूचनी में छलांग लगाई है और गुणात्मक सुधार किया है। इस वजह से बेहतर रैंकिंग के लिये जरूरी आंकड़ों का गणित पहले से बेहतर हुआ है।

हाल के महीनों में रिसर्च, समझौता ज्ञापनों, छात्रों के कैंपस चयन की उपलब्धियों से इन कैंपसों के प्रति छात्रों का रुझान बढ़ा है। आईआईटी पटना में हाल के दो वर्षों में कैंपस चयन की स्थिति, सालाना पैकेज में आश्चर्यजनक सुधार, शिक्षण और शोध की गुणवत्ता में बढ़ोतरी, राज्य में स्कूली शिक्षा से लेकर तकनीकी शिक्षा को बेहतर करने की दिशा में समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर से बेहतर रैंकिंग की उम्मीद है। पिछले दो सालों से रैंकिंग की सूची में देरी हो रही है। जुलाई के अंत तक संस्थानों की ताजा रैंकिंग जारी हो सकती है।

एनआईटी के निदेशक पीके जैन ने कहा कि इस बार एनआईटी पटना के शीर्ष 50 संस्थानों में शामिल होने की उम्मीद है। एनआईआरएफ के मानकों के अनुरूप संस्थान की प्रगति देखी गई है। ऐसे में सबसे महत्वपूर्ण मानक परसेप्शन में सुधार से उम्मीद है। यह परसेप्शन संस्थान के छात्रों, अभिभावकों के फीडबैक से तय होता है। इन दोनों केंद्रीय संस्थानों के अलावा एनआईआरएफ की रैंकिंग में प्रबंधन की पढ़ाई की कोटि में सीआईएमपी पिछले साल बिहार में सबसे शीर्ष संस्थान बनकर उभरा था। हाल के दिनों में शत-प्रतिशत कैंपस चयन, इंक्यूबेशन सेंटर से स्टार्टअप में बढ़ोतरी, एकेडमिक सत्र का पालन, प्रशिक्षण कार्यक्रमों में बढ़ोतरी और संस्थान में पढ़ाई पूरी करने वाले छात्रों और अभिभावकों के बेहतर फीडबैक से संस्थान की ओर छात्रों का झुकाव बढ़ा है।

ज्ञात हो कि एनआईआरएफ 2021 के ओवर ऑल कैटेगरी में आईआईटी पटना का 51वां स्थान है। 2020 में ओवर ऑल कैटेगरी में 54वां स्थान प्राप्त किया था जो 2019 से भी काफी बेहतर था। 2019 में आईआईटी को 58वां स्थान प्राप्त हुआ था। इंजीनियरिंग कॉलेजों की सूची में आईआइटी पटना ने 21वां स्थान प्राप्त किया है। वहीं 2020 में आईआईटी पटना ने 26वां स्थान प्राप्त किया था। एनआईटी पटना को इंजीनियरिंग कॉलेज की सूची में 72वां स्थान मिला है, जबकि 2020 की रैंकिंग में 92वां स्थान मिला था। वर्ष 2019 में इंजीनियरिंग कॉलेज की सूची में एनआइटी पटना को 134वां स्थान प्राप्त हुआ था। सीआईएमपी ने पिछली बार देश के शीर्ष 100 प्रबंधन संस्थानों में जगह बनाई। यह राज्य का इकलौता राजकीय संस्थान था जिसे राष्ट्रीय सूची में स्थान मिला।

अधिकतर संस्थान नहीं लेते हैं रैंकिंग प्रक्रिया में भाग

एनआईआरएफ की रैंकिंग प्रक्रिया में राज्य के अधिकतर संस्थान भाग नहीं लेते हैं। पटना विवि, पाटलिपुत्र विवि, मगध विवि सहित अधिकतर संस्थानों की ओर से इस दिशा में अबतब कोई पहल नहीं की गई है। आर्यभट्ट ज्ञान विवि अबतक न तो नैक की ग्रेडिंग में और न एनआईआरएफ में भाग ले सका है। वहीं अन्य राज्यों में सरकारी संस्थानों के साथ-साथ निजी संस्थानों में इस रैंकिंग प्रक्रिया में भाग लेने की प्रतिस्पर्द्धा होती है।

क्या है एनआईआरएफ रैंकिंग

भारत में प्रतिवर्ष नेशनल इंस्टीट्यूशनल रैंकिंग फ्रेमवर्क देश की सभी टॉप यूनिवर्सिटीज, कॉलेज और अन्य शैक्षणिक संस्थानों को उनके परफॉरमेंस के आधार पर रैंकिंग देने का काम करता है। इसमें भाग लेने वाले देशभर के विवि, कॉलेज और अन्य शैक्षणिक संस्थानों में शैक्षिक गुणवत्ता के साथ अन्य सभी पैरामीटर को मापा जाता है। एनआईआरएफ द्वारा शैक्षिणक संस्थानों को रैंकिंग देने की शुरुआत 29 सितंबर 2015 को तत्कालीन केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री द्वारा शुरू की गई थी। 4 अप्रैल 2016 को इसने अपने रिसर्च के बाद कॉलिजों की पहली लिस्ट जारी की थी। तब से एचआरडी मंत्रालय द्वारा हर साल अलग-अलग कोटि में यह रैंकिंग जारी की जाती है। पिछले दो सालों से रैंकिंग जारी करने के समय में लेटलतीफी हो रही है। हालांकि इसमें भाग लेने वाले संस्थानों की संख्या में साल 2016 में संस्थानों को केवल चार कैटेगरी में स्थान दिया गया था जो 2019 में बढ़कर 9 हो गई और वर्ष 2021 में कुल 11 कैटेगरी में रैंकिंग दी गई थी। कुल पांच पैरामीटर के आधार पर कैटेगरी वाइज रैंक लिस्ट तय होती है।

सौजन्य से हिन्दुस्तान | पटना | 04.07.2022 | पृष्ठ सं० 06

लॉकडाउन में शुरू की गार्डनिंग, घर और छत पर हरियाली से खिल जाता है चेहरा

स्वच्छता की ओर कदम, घर के कचरे से जैविक खाद बना अपने गार्डन की बढ़ा रहीं हरियाली

घर बनाएं हरा-भरा

सिटी रिपोर्टर | पटना

घर में गार्डनिंग का शौक हर किसी को होता है, लेकिन सीमित जगह की वजह से कई अपने शौक को मार देते हैं। कोरोना काल में हरियाली और औषधीय पौधों का महत्व समझने के बाद कई लोगों ने अपने इस शौक की तरफ रुख किया था। अपनी छत और बालकनी में विभिन्न पेड़-पौधे लगाए। इतना ही नहीं अपने गार्डन को हरा रखने के लिए घर के निकले कचरे से ही खाद बना डाला। अब तो यह इसके इतने अभ्यस्त हो गए हैं कि दूसरों को भी टिप्स देते रहते हैं। घर में गार्डेनिंग में सबसे अधिक रुचि पटना शहर की महिलाओं में देखने को मिलती है। वे खुद ही सब्जी के छिलके, गाय के गोबर और विभिन्न मिट्टियों को मिलाकर खाद तैयार करती हैं। मिलिए गार्डिंग की शौकिन कुछ महिलाओं से...

ऑनलाइन सीखा घर में खाद बनाना

पाटलिपुत्र की रहने वाली अनुपमा कुमारी बताती है कि उन्होंने कुछ वक्त पहले ही गार्डनिंग की शुरुआत की है। वह अपने घर पर विभिन्न तरह के पेड़-पौधे उगा रही हैं। वह अपने घर में कचरे को अलग-अलग तरह से बांटती हैं, फिर उससे बने जैविक खाद को वह अपने पेड़- पौधे में इस्तेमाल करती है। उनका मानना है कि इससे घर का 40-50% कचरा घर में यूज हो जाता है। उन्होंने यूट्यूब के माध्यम से इसके बारे में जानकारी हासिल की थी। रात के बचे खाने, पत्ते और मिट्टी को मिलाकर वह खाद बनाती हैं। इससे उनका परिवार काफी सहयोग करता है।

पहले सीखा फिर बनाया वर्मी कंपोस्ट

हाउस वाइफ सैलजा रंजन बताती हैं कि गार्डनिंग तीन साल पहले शुरू की। घर की पुरानी बाल्टी और गमलों में पेड़ लगाना शुरू किया। अब अपने घर की छत पर वह विभिन्न प्रकार की सब्जी और फल उगाती हैं। वह बताती हैं कि पेड़ लगाने से ज्यादा उनका रखरखाव जरूरी होता है। मार्केट के जैविक खाद से वह बहुत खुश नहीं थी। घर पर ही इंटरनेट और अन्य लोगों से जानकारी लेकर जैविक खाद बनाना सीखा। अब वह विभिन्न तरीके से वर्मी कंपोस्ट बनाती हैं, छत पर अक्सर खाली समय में वर्मी कंपोस्ट बनाती हैं।

घर के कचरों से तैयार किया वर्मी कंपोस्ट

प्रोफेसर रह चुकी अनिता श्रीवास्तव बताती हैं कि पेड़-पौधों का उन्हें काफी शौक है। उन्होंने अपनी छत पर आम, केला, अनार, मेहंदी, गुलाब, ऐलोवेरा, सदाबहार, तुलसी और नींबू के पेड़ लगाए हैं। वह बताती हैं कि उनके घर में किचन का जो भी कचरा जमा होता है, उसे वह वर्मी कंपोस्ट बनाने के लिए इस्तेमाल करती हैं। वह अपने घर में कचरे को दो विभिन्न तरीके से बांटती हैं, छिलकों और अन्य चीजों को जिनसे वह जैविक खाद बना सकती हैं उन्हें वह अलग से जमा करती हैं। इस खाद बनाने से घर का 40-50% कचरा घर में ही इस्तेमाल हो जाता है।

सौजन्य से दैनिक भास्कर | पटना | 04.07.2022 | पृष्ठ सं० 9

पटना जू में साउथ अफ्रीका से लाये जायेंगे 36 जानवर

संवाददाता ▷ पटना

पटना जू में जल्द ही दर्शक अफ्रीकी जंगली जानवरों का दीदार कर सकेंगे. साउथ अफ्रीका से सात अलग-अलग तरह के कुल 36 जानवर लाये जायेंगे. इनमें जिराफ, अफ्रीकी शेर, जेब्रा, डबल हॉर्न राइनो, इंपाला, घड़ियाल और ओरिक्स हैं. इसके लिए पटना जू प्रशासन और साउथ अफ्रीका की डोनर एंजेंसी की ओर से वर्चुअल बैठक की गयी. बैठक में निर्णय लिया गया कि पहले फेज में पटना जू को 36 जानवर डोनेट किया जायेगा. दूसरे फेज में राजगीर जू सफारी के लिए कुल 20 जानवरों को लाया जायेगा. वर्चुअल मीटिंग में पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग के प्रधान सचिव अरविंद कुमार चौधरी, कॉन्सूलेट जेनरल ऑफ इंडिया अंजु रंजन और जोहान्सबर्ग की डोनर एंजेंसी चीफ हैनी शामिल हुए.

इन जानवरों के लाये जायेंगे जोड़े

जानवर	संख्या	नर	मादा
जिराफ	4	2	2
डबल हॉर्न राइनो	6	2	4
अफ्रीकी शेर	6	2	4
इंपाला	6	2	4
ओरिक्स	4	2	2
घड़ियाल	6	2	4

जानवरों के लिए जल्द ही तैयार किये जायेंगे बाड़े : जू प्रशासन की ओर से जल्द ही जानवरों को रखने के लिए बाड़े तैयार करने की शुरुआत की जायेगी. साउथ अफ्रीका से जानवरों को लाने और उन्हें यहां रखने की व्यवस्था करने में करीब 10 करोड़ रुपये खर्च किये जायेंगे.

सौजन्य से प्रभात खबर | पटना | 04.07.2022 | पृष्ठ सं० 5

बिहार कोविड अपडेट

⇒ कुल सक्रिय मामलों की संख्या	1094
⇒ पिछले 24 घंटे के दौरान नए पॉज़िटिव मामलों की संख्या	218
⇒ पिछले 24 घंटे के दौरान स्वस्थ हुए मरीजों की संख्या	238
⇒ कुल वैक्सीनेशन	13,68,78,431
⇒ कम से कम एक डोस	7,13,54,248
⇒ पूर्ण वैक्सीनेटेड	6,19,61,596

बिहार फाउन्डेशन नेटवर्क

विदेश अवस्थित चैप्टर

- कतर
- दक्षिण कोरिया
- जापान
- हॉग कॉग
- यू.ए.ई.
- सिंगापुर
- बहरीन
- न्यूजीलैंड
- कनाडा
- यू.एस.ए.
- ऑस्ट्रेलिया
- सऊदी अरब

देश अवस्थित चैप्टर

- मुम्बई
- हैदराबाद
- पुणे
- चेन्नई
- नागपुर
- गुजरात
- कोलकाता
- वाराणसी
- गोवा

पाठकों से अपील

बिहार फाउन्डेशन के जुड़ने के लिए

बिहार फाउंडेशन उद्योग विभाग के अन्तर्गत राज्य सरकार की एक निबंधित सोसाईटी है जिसका मुख्य उद्देश्य राज्य के बाहर बसे देश-विदेश अवस्थित बिहारी समुदायों को उनके स्वयं के बीच तथा गृह राज्य के साथ जोड़ने का है। वर्तमान मे बिहार फाउंडेशन के कुल 21 चैप्टर्स हैं. बिहार फाउंडेशन से जुड़ने के लिए नीचे दिए वेबसाइट पर जाकर Non Resident Bihari Registration पर क्लिक करें और उपलब्ध फार्म को भरकर जमा करें -

https://biharfoundation.bihar.gov.in.